" वन विद्यालय = अमरकण्टक "

PAGE NO. ·
DATE: 9/11/04

सामाजिक कर्तव्यों का जिम्मेदारी पूर्वक निर्वाहन

शिविर में आने से पहले यही समझ रही थी कि हमें व्यावसायिक शिक्षा शिविर लगाया जा रहा है पर शिविर में उपस्थित होने के बाद हमें जो शिविर के माध्यम से शिक्षा मिल रही एक व्यवहारिक शिक्षा है जो कि हर मनुष्य को चाहिए या उसके साथ है। जो कि मानव समझ नहीं पा रहा है यदि हर मानव में जागृति लाना है तो व्यावसायिक शिक्षा के साथ ही मानव को व्यवहारिक समझदारी [illegible] मानव के शिक्षा की जरूरत है मनुष्य व्यावसायिक शिक्षा को ले कर आगे बढ़ने को सोचता है और सुख खोजता है पर वास्तव में थोड़ा सा भी ध्यान दिया जाये तो वह व्यक्ति स्वयं सुखी नहीं रहता बल्कि अपने साथ-साथ दूसरों को भी दुःखी कर डालता है

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Teacher's Signature

PAGE NO. :
DATE : / /

आज सभी मनुष्य को एक जैसा जरूरत और आवश्यकता है और वह है शरीर के लिए कपड़ा, मकान, भोजन, प्रकृति साधन मौ: मनोरंजन, दूर संचार। तथा जीवन के लिए प्रेम, विश्वास, सम्मान चाहिए। पर ये सब पाने के लिए पैसा को ही सर्वोत्तम मानते है यदि हर मनुष्य थोड़ा सा सोचे तो पैसा से कपड़ा, भोजन खरीद सकता है पर प्रेम सम्मान नही खरीद सकता। आज हर जगह जिसे हम सम्मान, विश्वास समझते है तो वह पद का दबाव से समझते है, डर भी है पर वही पद से हट दिया जाता है तो कोई सम्मान नही मिलता इसे पाने का एक ही तरीका है अपने में अच्छाई हो, व्यक्तित्व हो। संग्रह का कोई तृप्ति बिन्दु नही है। यदि जीना है तो हमें क्या चाहिए और कितना चाहिए इसके साथ हमारा संबंध क्या है तो जीना भी

Teacher's Signature

आसान हो जायेगा और सुख भी मिलेगा अपने मे, परिवार में, समाज में, और प्रकृति के साथ संबंध को पहचाने और जिम्मेदारी पूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करें तो सारी सुख और सुविधा दोनों ही मिल जायेगा।

हर मनुष्य यदि स्वास्थ्य रहना चाहता है तो वह अपने आस-पास के वस्तुओं के साथ तालमेल करना सीख ले तो शरीर और जीवन दोनो स्वस्थ रह सकता है यह मनुष्य के मन को समझने से ही होता है।

मनुष्य के जीवन और शरीर के लिए कितना धन पर खर्च करता है यह सब सोच-समझ कर करें। स्वास्थ्य और संयम पर समझें। जीवन में समझदारी को व्यक्त करने योग्य बनाने से हमें भौतिक साधनों की बहुत कम जरूरत होगी यह शिविर के माध्यम से या व्यावहारिक शिक्षा माध्यम से ही उत्तम है।

Teacher's Signature

कम समय में अधिक से अधिक समझ और ज्ञान प्राप्त हो सकता है। हमें यही उम्मीद है और श्रम करके अधिक करेंगे। यह सब परम्परा से ही मिलता है। यदि प्रकृति के व्यवस्था को ही देखा जाये तो प्रकृति ने हर मानव के लिए इतना सुख-सुविधा रखा है कि जिसे कम कभी खत्म नही होते है। जो कि मानव समझ नही पा रहा है यदि समझ हो वही समझदार है। और वही कार्य सही तरीका से कर सकता है यदि नही समझ रहा है तो किसी भी कार्य को करता तो है पर वही कार्य सेमार को हानि पहुँचाता है।

मुझे पूरा उम्मीद है कि शिविर के माध्यम से सभी शिक्षित, अशिक्षित व्यक्ति में समझदारी आयेगी। कुछ कहना था बस्ते।

अमरकेश

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर अमरकन्टक

नाम - मोहन सिंह धुर्वे
पद - बा. ऊ. स्वा० कार्यकर्ता
उप स्वा० केन्द्र नोनघटी
प्राथमिक स्वा० केन्द्र अमरकन्टक
सेक्टर अंजरी
सामुदाय स्वा० केन्द्र पुष्प राजगढ़
जिला अनूपपुर (म.प्र.)

जीवन विद्या शिविर से हमारे मनोमस्तिष्क अन्धकारमय हृदय को ज्ञान की किरणपुंज प्रकाश से प्रकाशित कर अपनी जीवन एवं हमारे समाज एवं आने वाले पीढ़ी के लिए हमारे शिविर से मार्गदर्शन मिला हम लोग देदीप्यमान हुए हम अपनी भविष्य में वर्तमान समय के अनुसार अपनी छोटी से बुद्धी विचार को अवश्य स्वयं में परिवार में समाज में अवश्य व्यक्त करेंगा।
अपनी समझदारी के मुताबिक जिस कार्यक्षेत्र में शासकीय सेवा करने जाऊंगा प्रचार प्रसार के माध्यम आम जनताओं के समक्ष अपने समझदारी के अनुसार समझाईश करेंगा।
हमारे सोचने विचारने स्मरण में जो कमी है आगामी शिविर में गुरुदेव से प्रार्थना करता हूं। हमें प्रदाय करें। अनुनय विनय सेवा प्रेषित है।

[signature]
9.11.04

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

शिविर में उपस्थित रहकर ज्ञानार्जन किया एवं जो भी सीखा अत्यन्त खुश रहा दिन दूना रात चौगुना बोलने का सोचने के लिए भिन्न भिन्न जानकारी मिला।

9.11.04
(X).P.H.W. Nonghalti

19.

शिविर क्या है? सामाजिक कर्तव्यों की जिम्मेदारी पूरा करना।

मैं क्या चाहता हूँ। सीमित या निरंतर। सीमित में शरीर के साथ जुड़ा हुआ। भोजन, मकान अलंकार, T.V., दूर दर्शन, दूर गमन (2) निरंतर में सम्मान, विश्वास, और प्रेम दोनों मिलकर सीमित चाहिए। प्रेम पैसा से नहीं मिलता। सम्मान, और विश्वास, समझदारी, देना चाहिए। सम्मान 2 प्रकार है। सम्मान और चापलूसी। अच्छाई लेना और मूल्यांकन करना ये है सम्मान। चापलूसी मैंने जो चीज नहीं उस को बढ़ाकर बोलना।

कमाना और समझना। समझदारी है तो काम करके खुश होते हैं व्यक्तित्व हमेशा रहता है पर नहीं रहता है। कोई भी काम समझदारी से भी होगा। सुधार का कोई खास बिन्दु नहीं है। आवश्यकता के मुताबिक है। हम सभी जीते हैं एक बच्चे से लेकर बड़े तक। यही 6 तालमेल जरूरी है (1) अपने आप (2) शरीर के साथ (3) परिवार के साथ (4) समाज में (5) हवा पानी मिट्टी भोजन (6) अस्तित्व।

इस में ज्ञान और अनुभव, तालमेल ये जरूरी है। वह सही है तालमेल में व्यवस्था और समझदारी।

शरीर में 2 क्रिया है। (1) अपने आप (2) जानबूझकर।

I → अपने आप में जिम्मेदारी नहीं है (शरीर) शरीर कि गति कम है, भोजन जरूरी है। शरीर सोता है।

II जानबूझकर में मतलब (मैं) (जीवन) गति बहुत अधिक है जीवन सोता नहीं। हर समय जागता है

हम बोलते हैं करते नहीं। समाज में भी परिवार में भी पैसा खर्च करते हैं लेकिन शिक्षा में कम करते हैं अधिक देना चाहिए। स्वास्थ और संयम एक साथ जुड़ा है। जीवन सभी में एक समान है लेकिन शरीर अलग अलग है। मनुष्य कि उपलब्धि पैसा नहीं वस्तु है। मनुष्य का श्रम के साथ कला कौशल भी और साथ में कोई वस्तु। जो चीज परिवार में है वह समाज में है व्यक्ति एक साथ हमेशा नहीं चलता है। सबन्ध हमेशा रहता है। सब से जरूरी काम जीवन में ध्यान देना और शरीर में।

कोई भी चीज को जाँचना और उस के बारे में चर्चा करना इसी को शिविर कहते हैं। इसके लिए ज्ञान, समझदारी व्यवहार, जिम्मेदारी, और विश्वास जरूरी है। इस को आगे बढ़ाकर काम करना है। प्रकृति में भी सम्बन्ध है पेड़ पौधा पशु पक्षी, भी मनुष्य के साथ जुड़ा है।

A. [illegible]
P.T.O PHC Alk.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

ये शिविर से मालुम हुआ है। जिम्मेदारी, विश्वास समझदारी, व्यवहार, प्रेम, सम्मान बराबर होना चाहिये।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर अमरकंटक

9/11/04

नाम - बुधलाल मार्को
पद - बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता
उप-स्वास्थ्य केन्द्र पोड़की P.H.C. अमरकंटक C.H.C पुष्पराजगढ़
जिला अनूपपुर (म०प्र०)

जीवन विद्या शिविर में कैसे लगा

जीवन विद्या शिविर मे मुझे अच्छा लगा जीवन का प्रभाव शरीर पर पड़ता है जीवन में समझदारी है तो समाधान है। यदि समझदारी नही है तो समस्या आ जाती है। कोई भी कार्य करकेपहले समझदारी है तो कोई समस्या नहीं है। मनुष्य वह है जो मनुष्य से सम्बन्ध रखता है मनुष्य को अपने जीवन मे जीने के लिए समझादी होना अति आवश्यक है। कुछ में मादक पदार्थ में हम लोग व्यर्थ के खर्च करते है इसे अपने जीवन में समझादी नही है। यदि ये शिक्षा स्वास्थ्य में खर्च करे तो हमें समाधान है। हमें अपने जीवन में सीमीत और निरन्तर पर विशेष ध्यान देना है। सीमीत. आहार, आवास, अलंकार, दूर श्रवण, दूर दर्शन, गमन, निरन्तर - सम्मान, विश्वास प्रेम ममता आदि। इन पर अपने जीवनमेंध्यान दूगाँ।

शिविर का उद्देश्य -

इस शिविर में हमें जीवन में जिम्मेदारी विश्वास प्रेम, सम्मान स्नेह के साथ स्वंय मे परिवार या समाजमें विश्वास के साथ रहना चाहिए। इस शिविर में अच्छाअपने जीवन में अच्छे ज्ञान का अनुसरण किया। इस शिविर में हमें अच्छा लगा।

दायित्वों के निर्वाह विषय पर प्रशिक्षण

प्रशिक्षण अवधि 04-11-04 से 09-11-04 तक

दिनांक 4-11-04 से 9-11-04 तक श्री साधन भट्टाचार्य एवं उनके साथियों के द्वारा जीवन एवं मनुष्य को किन-किन चीजों की आवश्यकता है, मनुष्य को समाज में किस तरह सम्बन्ध एवं ताल मेल बना कर सुख एवं दुख दुःख का अनुभव करता है, के विषय में एवं अन्य सारी बातों पर बारीकी से ध्यान देकर जीवन को सुखी बनाने एवं समृद्ध बनाने के बारे में बताया गया

हम उनके आभारी हैं एवं अपने-आप को भाग्यशाली मानते हैं कि इस शिविर के माध्यम से ऐसे ज्ञानवर्धक बातें प्राप्त हुई।
भविष्य में आशा करते हैं कि जब भी आपके द्वारा ऐसे शिविरों का आयोजन किया जाय तो कृपया सूचित करने का कष्ट करें ताकि हम भी इस ज्ञान गंगा रूपी का कुछ बूंद प्राप्त कर सकें।

रामदास बुनकर
स्वा. कार्यकर्ता
सी. एच. सी. जयपुर
9.11.04

प्रशिक्षण के पहले मैं अपने आप में शरीर, और जीवन को एक ही मानकर चल रहा था, लेकिन मैं अब भलीभाँति समझ लिया हूँ कि शरीर और जीवन अलग-2 है, और इनकी आवश्यकता भी अलग-2 है, अपने जीवन एवं अपने परिवार में इस भावना को स्थापित करने का पूर्ण प्रयास करूँगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

9/11/04

जीवन विद्या शिविर अनुभव पत्रक

नाम दुर्योधन सिंह परस्ते
बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता उप स्वा. केन्द्र अंधेरी पुष्पराजगढ़ जिला अनूपपुर

प्रश्न शिविर कैसा लगा
उत्तर - जीवन विद्या शिविर मुझे बहुत अच्छा लगा जीवन विद्या शिविर में जीवन से मिलकर जो अभी अज्ञानता फैल रहा जो वास्तव में जो होना चाहिए नहीं हो रहा क्योंकि हम दूसरे के नकल करते चले जा रहे उसका वास्तविक को नहीं देख रहे क्योंकि इस मातृ भूमि पर जो सभी चीज उपलब्ध है नहीं देख रहे हैं
और मैं शिविर में सही रूप से बहुत ऐसे बातों को जानने को मिले समय कम होने हम सीमित हैं आपने आपको सन्तोष कर लेना आदि इसका विपरीत करते हैं जो हम अपने जीवन सही ढंग से पूर्ण रूप से नहीं कर सकते हम को अपने परिवार के सभी सदस्य इसके बारे बहुत जानकारी देकर ज्ञान दे

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

के बातो को अवगत करूंगा। मेरे इस शिविर बहुत गुणात्मक ज्ञात हुआ जब की इस दुनिया में ऐसे एक दो ही मिलगे तीसरा नही मिला। ऐसे ज्ञान का बाते नही करते। ~~और~~ ~~बहुत~~

प्रश्न २ हम कैसा लगा।

मुझे जीवन विद्या शिविर में बहुत ज्ञान बातो से समझ गया इसलिए बहुत अच्छा लगा।

यदि हम इस पर ध्यान नही देते तो बहुत आयेगा। इस को एक दुसरे प्यार से प्यार करने वाले वही समस्याऐं थोड़े दिख लगा कर धारि से धारि कर जो अपने आत्मा ~~सन्तुष्टि~~ सन्तोषटी दे ~~और~~ ~~सेर~~ ~~अपना~~ अपना विचार धारण चाहिए है जो ऐसे

ऐसे छोटे-छोटे चीज को विस्तार रूप से अवगत करते इस लिए मुख्य व्यकुल हो जाता और किसी कार्य क्षमता क्षीण हो जाता।

हमारे जीवन आने वाले समय विपत्ती परशान होता सकते इसलिए सीमित ऐसे ~~कार्य~~ रुकावट है जो समझ कर कार्य करना होगा।

निरंतर से ~~सम्मान~~ पक्षा अभाव और सम्मान को प्रेरणा देता।

मुझे से बहुत ऐसे ज्ञान जो हम भूल ते जा रहे उसको वास्तविकता नहीं देख रहे।

जो आदमी बिना सोच विचारे काम करे अन्त पश्चताप करता है।

डी.डी. पाटकर. C.P.E. नागपुर
सेवाग्राम :- जुलाई 93

---

① हमारी आवश्यकताएं क्या है।

(1) आहार, मकान, कपडे, अलंकार, मनोरंजन, वाहन - भौतिक सीमित होना चाहिए

(2) निर्वाह :- जिसमें सम्मान, विश्वास, प्रेम चाहिए
सीमित साधनों को ~~निरंतर~~ समझाना।
जोड़ने पर मनुष्यों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

(3) व्यवहारी :- व्यक्ति में जो गुण है उसकी तारीफ करना

सम्मान :- मनुष्य के अंतिमार्थ का आदर करना सम्मान है।

~~जीवन के~~ व्यक्ति को अपने परिवार समाज के साथ संबंधों में आवश्यक है व्यक्ति के साथ समूहों से कई अधिक और अपने परिवार, एवं समाज के साथ अधिक से अधिक एक दूसरे की आवश्यकताओं में हाथ बटाना। निस्वार्थ, सादगी, ईमानदारी, सहनशीलता में अधिक सौन्दर्य प्रदर्शन में हमें अधिक समय एवं पैसा समझदारी के साथ विचार एवं व्यवहार में खर्च करना चाहिए व्यक्ति को शरीर के वश में न होकर समझदारी के साथ अपने जीवन में आनंद की ओर ध्यान देना चाहिए

प्रकृति के द्वारा हमें सभी वस्तुएं प्राप्त होती हैं परंतु हम प्रकृति की रक्षा कर रहे हैं नहीं। हमें जीव जन्तुओं की रक्षा करना है।

शरीर के द्वारा हमें सीमित स्पर्श और अपने जीवन का राह। ~~को~~ उपयोग करना चाहिए।

नोट:- सीमित स्पर्श करने के ~~[illegible]~~ कोशिश करूंगा इसे अपने आप में मोटक उसे छोड़ने की कोशिश पूर्वक से करूंगा।

जीवन विद्या शिविर आयोजन

जीवन विद्या शिविर : इस शिविर का जैसा नाम है वैसा इस का काम है, जीवन मे मनुष्य क्या चाहता है क्या नहीं चाहता और चाहता है तो कितना क्या चाहता है मनुष्य के जीवन से सम्बन्धित आवश्यकता को समझदारी के आधार पर कोई भी कार्य किया जाये तो सचमुच न समस्या रहेगी न किसी भी प्रकार की तृष्णा, मानव अपने जीवन में अगर अपने कर्त्तव्यों के बारे मे समझदारी व ईमानदारी का अनुसरण करले तो न खुद दुखी रहेगा न दूसरो को दुख पहुचायेगा मनुष्य अपने जीवन मे जीवन जीने की प्रक्रिया को समझ कर चल कर जिये तो वह सफल जीवन जी सकता चाहे वह कोई भी विषय है जैसे प्राकृति, समाज परिवार स्वास्थ्य सभी का सम्बन्ध मानव जीवन से है संसाधन जैसे भौतिक हो या मानव जीवन से सम्बन्धित कुछ भी हो सभी कार्यों को सभी का सही मूल्यांकन कर उपयोग करे तो खुद सुखी रहेगा और दूसरो को भी सुखी रखेगा। यही मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिये।

आधुनिक जीवन मे मनुष्य समाज जिस तरह जी रहा है वह जीवन जीने की शैली से विपरीत है जो मनुष्य के दुख के समस्या का कारण है।

स्वास्थ्य एंव जीवन : मनुष्य के जीवन मे स्वास्थ्य का घनिष्ट सम्बन्ध है स्वास्थ्य के बिना जीवन जीवन के बिना स्वास्थ्य, एक दूसरे के बिना दोनो अधूरे है अगर संयम आहार विहार का जीवन मे अनुसरण किया जाय तो मनुष्य स्वस्थ्य रहेगा स्वस्थ्य रहेगा तो सुखी रहेगा।

सचमुच मे यह शिविर अपने कर्त्तव्यों के प्रति समाज के प्रति परिवार के प्रति प्राकृति के प्रति या अन्य के प्रति मनुष्य को क्या कैसे किस व्यवस्था से निर्वाहन करना चाहिये समझ ले तो इस समाज मे जीवन मे कोई भी समस्या नही रहेगी। इस शिविर में ज्ञान का सागर मिला, अगर इस को हम अपने जीवन मे अनुसरण करले तो स्वयं सुखी रहूगा

परिवार, समाज को सुखी रख सकता हूँ जो कि अपने जीवन से अनुसरण करना समाज के परिवार को भी अनुसरण करने के लिये प्रेरित करना। इस प्रकार के शिविरों का आयोजन होना चाहिये जिससे समाज में जागरूकता बढ़ाई जा सकती है जिससे सुखी समाज स्वस्थ समाज की ~~स्थापित~~ ~~किया~~ व्यवस्था हो सकती है।

श्री लाखन सिंह M.P.W.
उपकेन्द्र - बारी, C.H.C. पुष्पराजगढ़
जिला अनूपपुर (म.प्र.)

9-11-04

जीवन विद्या शिविर

शिविर का उद्देश्य : समाज में स्वा० के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देना स्वा० चेतना फैलाने में समस्याओं का समाधान समाज विकास और स्वा० का सम्बन्ध बनाये रखना तथा अपने जिम्मेदारी समझना।

इस शिविर में हमें अनेक जानकारियाँ प्राप्त हुआ जैसे : जीवन विद्या : मैं क्या चाहता हूँ कितना चाहता हूँ। जीवन व शरीर क्या है मनुष्य के जीने की परिस्थितियाँ स्वा० संयम कैसी होनी चाहिये, मानव कुलांक्ष्य क्या है समाधान के लिये सम्बन्ध कैसे रखने को समझना।

इन सभी ~~सभी~~ के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी जो मिला हमें बहुत ही ~~ही~~ उपयोगी महसूस हुआ क्यों कि ये हमारे ही रोज की दिन चर्या या स्वयं के जीवन के लिए ही है जबकि पहले इसतरह नहीं सोचे थे लेकिन शिविर में आने के बाद भाव - नायें बदल गयी है।

लालजीराम एम० पी० डब्लू०
उप स्वा० केन्द्र पडरिया
पी० एच० सी० अमरकंटक
सी० एच० सी० राजेन्द्रग्राम

प्रतिष्ठा में -

श्रीमान जिला अधिकारी महोदय

अनूपपुर (म.प्र.)

विषय :- जीवन विद्या शिविर का प्रतिवेदन

सन्दर्भ :- 4 से 9 नवंबर 2004, स्वास्थ्य विभाग के कार्यकर्ताओं के साथ

महोदय सनम्र निवेदन है कि :-

उपरोक्त शिविर में स्वास्थ्य विभाग के 9 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रतिदिन 7 घंटे की गोष्ठी में सभी निष्ठापूर्वक भाग लिए। शिविर के अंत में सभी लोगों ने लिखित एवं मौखिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इसका सारांश निम्न है :—

1. शिविर से यह स्पष्ट हुआ कि कर्तव्य और दायित्व, बोझ नहीं है, बल्कि अपने समझ और योग्यता को जाँचने और प्रमाणित करने का उपाय है। ये उपाय मानव की तृप्ति के लिए अनिवार्य है।

2. कर्तव्य एवं दायित्व की स्पष्ट परिभाषा एवं इसका दायरा स्पष्ट हुआ।

3. अभी तक अपनी प्रमुख आवश्यकता - रोटी, कपड़ा, मकान, श्रृंगार सामग्री, मोटर आदि मान रहे थे। शिविर से यह स्पष्ट हुआ कि इसके साथ-साथ सम्मान, विश्वास, समझदारी भी आवश्यक है। सम्मान, विश्वास निरंतर चाहिए जबकि भौतिक आवश्यकता सीमित है।

4. सम्मान - विश्वास जैसे मूल्यों के लिए अभी तक कोई कार्यक्रम ज्ञात नहीं रहा था। भौतिक आवश्यकता की पूर्ति एवं वृद्धि से ही मूल्यों को मानते थे, जो सही नहीं होता। स्पष्ट समझ एवं उसके अनुरूप व्यवहार से मूल्य स्पष्ट होता है।

5. स्वास्थ्य विधा में उचित आहार, विहार, व्यायाम तथा स्वच्छता का महत्व पहले से अधिक स्पष्ट हुआ। रोग होने के कारण का निवारण सतत जागरूकता से सम्भव है। इसके उपाय भी स्पष्ट हुए।

6. जीवनशैली का प्रभाव स्वास्थ्य पर एवं मनः स्वस्थता पर पड़ता है। इस दृष्टि से जीवनशैली पर विचार करना अनिवार्य समझ में आया।

शिविर के मुद्दों एवं कार्य-विधि पर, शिविरार्थियों को पूर्व से जानकारी होने पर श्राव्यता भी अधिक होती है। साथ ही गोष्ठी में 30-40 की संख्या होने पर परस्पर-चर्चा में गहराई बढ़ती है। पुराने शिविरार्थियों के होने पर भी गति में वृद्धि होती है।

इस ~~[illegible]~~ शिविर में भागीदारी करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ। इस शिविर से सामाजिक चेतना का विकास होता है, यह मेरा निश्चित मत है। इस हेतु अग्रिम शिविरों का आयोजन श्रीमान की ओर से होने पर, मैं पूर्व की तरह निःशुल्क समय देकर प्रसन्नता का अनुभव करूँगा।

धन्यवाद

साधन
साधन भट्टाचार्य
c/o श्री नागराज शर्मा
नर्मदा मंदिर के सामने
अमरकंटक

संलग्न :- ① शिविरार्थियों की सूची
② शिविरार्थियों का लिखित प्रतिवेदन की छाया प्रति

संलग्न ① शिविरार्थियों की सूची

1.	श्री बी. डी. पाटकर	CMC अनूपपुर
2.	—"— रामदास बुनकर	—"—
3.	—"— बुधलाल मार्को	पुष्पराजगढ़
4.	—"— दुर्योधन सिंह	—"—
5.	—"— मोहन सिंह धुर्वे	—"—
6.	—"— माखन सिंह	खाँटी
7.	—"— लालजी राम	—"—
8.	सुश्री कृष्णा पटले	अमरकण्टक
9	सुश्री ए. जॉन	—"—

कार्यालय, संचालक वन विद्यालय अमरकंटक , जिला – अनूपपुर (म0प्र0)

क्रमांक / स्था. / 2008 / 536 / अमरकंटक दिनांक 8/4/08

प्रति,

स्वामी श्री सोमेश्वर गिरी जी ,
सोनमूड़ा औषधालय अमरकंटक
श्री साधन भट्टाचार्य जी,
नर्मदा मंदिर औषधालय अमरकंटक

विषयः– **औषधीय पौधों के संरक्षण, संवर्धन एवं विपणन पर व्याख्यान देने वावत्।**

—**—

निवेदन है कि वन विद्यालय अमरकंटक में विषयांकित प्रशिक्षण दिनांक 21.04.2008 से 26.04.2008 के बीच आयोजित होना है। जिसमें आपको निम्नानुसार दिनांकों पर व्याख्यान हेतु सादर आमंत्रित किया जाता है। कृपया उपस्थित होकर व्याख्यान देने एवं चिकित्सीय परिक्षण करने का भी कष्ट करें।

क्र0	प्राशिक्षित का नाम	समय	दिनांक	कार्य
1	2	3	4	5
1	स्वामी श्री सोमेश्वर गिरी जी	11:00 बजे से 1:30 बजे	22.04.2008	व्याख्यान
		3:00 बजे से 5:00बजे	22.04.2008	फील्ड वर्क
2	स्वामी श्री सोमेश्वर गिरी जी	11:00 बजे से 1:30 बजे	23.04.2008	व्याख्यान
		3:00 बजे से 5:00बजे	23.04.2008	फील्ड वर्क
3	श्री साधन भट्टाचार्य जी,	11:00 बजे से 1:30 बजे	24.04.2008	व्याख्यान
		3:00 बजे से 5:00बजे	24.04.2008	फील्ड वर्क
4	श्री एस. एल. साकेत अनुदेशक	सुबह 11 से शाम तक	25.04.2008	भुण्डाकोना का भ्रमण

संचालक
वन विद्यालय अमरकंटक
जिला – अनूपपुर (म0प्र0)

पृष्ठा0क्रमांक / स्था. / 2008 / / अमरकंटक दिनांक ....
प्रतिलिपि :–

1. श्री एस. एल. साकेत (स.व.सं.) कोर्ष डायरेक्टर की ओर सूचनार्थ सम्प्रेषित। दिनांक 21.04.2008 एवं 26.04.2008 को आयोजित होने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर अवगत करावें एवं तदानुसार व्यवस्था करें, एवं उपरोक्त कार्यक्रम अनुसार अतिथियों को लाने एवं ले जाने की व्यवस्था भी करें।

Sd/-
संचालक
वन विद्यालय अमरकंटक
जिला – अनूपपुर (म0प्र0)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

श्री [illegible]
[illegible]